Ej – इज़राइल के लिए वापस लौटना संभव नहीं | 1

– Save This Page as a PDF–

इज़राइल के लिए वापस लौटना संभव नहीं

यह तीसरी बार था जब कोई यहूदी पीढ़ी ऐसी स्थिति में पहुँच गई थी जहाँ से वापस लौटना संभव नहीं था।

सबसे पहले, मिस्र छोड़ने के बाद, इस्राएल राष्ट्र कादेश समुदाय में पहुंचा (गिनती १३:२६-३३)। वादा किया गया देश लेने के लिए उनका था। बारह जासूस अंदर गए लेकिन केवल यहोशू और कालेब को यहोवा ने जो कहा था उस पर विश्वास था। निर्गमन की पीढ़ी ऐसे बिंदु पर पहुँच गई थी जहाँ से वापस लौटना संभव नहीं था। इससे उनके व्यक्तिगत उद्धार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, लेकिन उस पूरी पीढ़ी को निर्वासित कर दिया गया। इससे पहले कि इस्राएलियों की एक और पीढ़ी फिर से प्रवेश कर सके, उन्हें रेगिस्तान में चालीस वर्षों तक भटकना पड़ा और भूमि के बाहर मरना पड़ा।

दूसरा, राजा मनश्शे ने सुलैमान के मंदिर को मूर्तिपूजा का एक प्रमुख केंद्र बना दिया। वह पीढ़ी ऐसे बिंदु पर पहुंच गई जहां से वापस लौटना संभव नहीं था और एडोनाई ने बेबीलोन की कैद का फैसला सुना दिया। अपने जीवन के अंत में मनश्शे ने पश्चाताप किया और वह बच गया, लेकिन फिर भी उसे शारीरिक मृत्यु का सामना करना पड़ा और इज़राइल राष्ट्र तितर-बितर हो गया और बेबीलोन में सत्तर साल की निर्वासन का सामना करना पड़ा।

तीसरा, यरूशलेम में ईसा मसीह के विजयी प्रवेश के
बाद, हजारों लोगों ने उन्हें मसीहा घोषित किया। परन्तु एक सप्ताह के अन्दर ही उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। वह पीढ़ी ऐसे बिंदु पर पहुंच गई थी जहां से वापस लौटना संभव नहीं था। उनकी अस्वीकृति के परिणाम लगभग अगले ४० वर्षों तक नहीं भुगते जायेंगे। मसीहा और एक पीढ़ी के चालीस वर्षों के संबंध में रब्बी लेखन में एक दिलचस्प टिप्पणी है। रब्बी एलीआजर ने कहा, “मसीहा के दिन चालीस वर्ष हैं, जैसा कि कहा गया था, ‘चालीस वर्ष तक मैं इस पीढ़ी (निर्गमन की पीढ़ी) द्वारा

Ej – इज़राइल के लिए वापस लौटना संभव नहीं | 2

क्रोधित हुआ था।” इसलिए रब्बी लेखन चालीस साल की अवधि की अवधारणा का समर्थन करता है जिसमें इस्वर को एक विशिष्ट पीढ़ी द्वारा उकसाया गया था। ७० इसाई में, रोमन जनरल टाइटस ने यरूशलेम की घेराबंदी कर दी और लगभग दस लाख यहूदियों को सूली पर चढ़ा दिया। जिन लोगों को क्रूस पर नहीं चढ़ाया गया, वे 1948 तक दुनिया भर के देशों में बिखरे हुए थे, जब प्रलय के बाद संयुक्त राष्ट्र द्वारा इज़राइल राष्ट्र में सुधार किया गया था।

जब भी यहूदी तितर-बितर होते हैं तो उनमें निर्णय का एक तत्व शामिल होता है। जब वे आज्ञाकारी होते हैं – तो वे भूमि में एकत्र हो जाते हैं, परन्तु जब वे अवज्ञाकारी होते हैं – तो वे भूमि से तितर-बितर हो जाते हैं। जब आदम और हव्वा आज्ञाकारी थे, तो वे अदन के बगीचे का आनंद लेने में सक्षम थे, लेकिन जब वे अवज्ञाकारी थे, तो वे तितर-बितर हो गए, या वहां से निकाल दिए गए। बाबेल नगर में, जब वे आज्ञाकारी थे तो इकट्ठे हुए, परन्तु जब वे अवज्ञाकारी हो गए, तो वे सारी ज्ञात पृथ्वी पर तितर-बितर हो गए। परन्तु जब वे आज्ञाकारी हुए तो वे इस्राएल में वापस इकट्ठे कर लिये गये। बेबीलोन की बन्धुवाई के बाद, केवल लगभग पचास हजार लोग ही लौटे, लेकिन वे आज्ञाकारी थे और वे पूर्व से इस्राएल में वापस आ गये, जैसा कि हमेशा होता था। और जब वे अंततः एक राष्ट्र के रूप में लौटते हैं, तो यह हमेशा पूर्व से होता है।